दीदी मनमोहिनी

मनमोहिनी दीदी का लौकिक नाम गोपी था, उनका जन्म 1915 में सिंध, हैदराबाद (वर्तमान में पाकिस्तान) में एक अत्यंत वैभवशाली, प्रसिद्ध और सम्मानित सिंधी परिवार में हुआ था। बहुत अमीर परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी दीदी को अपने चारों ओर मौजूद भौतिक संपदा से खुशी नहीं मिलती थी। उन्हें सच्ची ख़ुशी भगवत गीता और अन्य धर्मग्रंथों को पढ़ने से मिलती थी। उन्हें सत्संगों में जाना और दान-पुण्य करना अच्छा लगता था। वे भगवद्गीता और उसमें अपने लौकिक नाम के अनुरूप, गोपियों की कहानियाँ बहुत पसंद करती थीं। कहानियाँ पढ़कर वे खुशी के आँसू बहाती थीं, और अक्सर सोचती थीं कि गोपियाँ कृष्ण से कैसे मिल पाईं। उनके मन में श्री कृष्ण से मिलने की गहरी लालसा थी, जिसने उन्हें एक उत्साही भक्त बना दिया। उनका भगवान शिव से बहुत गहरा प्रेम और अटूट विश्वास था, और वे एक सच्ची गोपी की तरह भगवान की याद में आध्यात्मिक नशा महसूस करती थीं।

दीदी वर्ष 1935-1936 में, संगठन के शुरुआती दिनों में अपनी लौकिक मां रुक्मिणी (बाद में रानी मां के नाम से जानी गईं) के साथ आईं थी। ब्रह्मा बाबा द्वारा बनाई गई महिला ट्रस्ट में मम्मा के साथ-साथ दीदी ने भी एक महत्वपूर्ण सदस्य की भूमिका निभाई। **दीदी एक अथक सामाजिक कार्यकर्ता थीं और शुरू से ही यज्ञ की जिम्मेदारियाँ संभालने में कभी पीछे नहीं हटती थीं।** लोगों के बीच आध्यात्मिक जागरूकता पैदा करने के कार्य में उन्होने अपना तन, मन, धन सब समर्पित कर दिया था। अपने समर्पण और कड़ी मेहनत के माध्यम से, दीदी संगठन के प्रशासनिक कार्यों में मम्मा (जगदंबा सरस्वती) की दाहिनी हाथ बन गईं।

दीदी एक अति उत्साही ईश्वरीय छात्रा थीं और अपनी अंतिम सांस तक उन्होंने ईश्वरीय संस्करणों को कभी नहीं छोड़ा। **वे ईश्वरीय संस्करणों को ध्यान से सुनकर उन्हें अपने स्वरूप में लाती थीं, इस प्रकार वह जो भी प्रचार करती,** स्वयं पहले उसका अभ्यास करती थीं। दीदी अत्यंत निष्ठावान थीं और मन, वचन, कर्म तथा वित्त (एकाउंट) में बहुत मितव्यय थीं। वह सच्ची- सच्ची अंतर्मुखी थीं। दीदी हमेशा दूसरों के गुणों को देखने और परखने में धनी थी। और वे हरफनमौला बनकर हर प्रकार की सेवा समय पर, सजग रहकर करती और कराती थी। वह सबके साथ समान व्यवहार करती थीं। **कोई भी निर्णय लेने या निर्देश देने से पहले दोनों पक्षों की बात सुनती थी, उसके बाद उनके द्वारा लिया गया निर्णय बहुत ही संक्षिप्त, मधुर और भलाई योग्य होता था।**

1950 के दशक की शुरुआत से ही वह प्रशासनिक कार्यों में शामिल रहती थीं। भारत विभाजन के बाद, दीदी को संगठन के लिए भारत में एक उपयुक्त स्थान खोजने का काम सौंपा गया, जो संगठन का आधार बन सके। अहमदाबाद, पुणे आदि में बहुत सारे स्थानों को देखने के बाद माउंट आबू को चुना गया क्योंकि, यह अपने शांतिपूर्ण और प्राकृतिक हरे-भरे पहाड़ी इलाके के कारण तपस्या/ आध्यात्मिक अध्ययन के लिए उपयुक्त आदर्श स्थान था।

1969 में ब्रह्मा बाबा के दिव्य फरिश्ता स्थिति प्राप्त करने के बाद, दीदी 1969 से 1983 तक संगठन की प्रशासनिक प्रमुख बनी रहीं। **उन्होने दादी प्रकाशमणि के साथ मिलकर 14 वर्षों तक बहुत ही कुशल तरीके से यज्ञ का प्रबंधन किया।** वे दोनों दो शरीर और

एक आत्मा की तरह थे। एक-दूसरे की राय के प्रति अत्यंत सम्मान और प्रेम रखते थे और संगठन के दैनिक मामलों को सुचारू रूप से चलाने के लिए सर्वसम्मति से निर्णय लेते थे।

दीदी बहुत सादा जीवन जीती थीं, **वह सादगी और विनम्रता की प्रतिमूर्ति रहीं।** दीदी में किसी को भी तुरंत सहज महसूस कराने और अपनेपन का अहसास कराने का विशेष गुण था। दीदी लोगों को आध्यात्मिक और मातृ प्रेम से बांधकर उनकी समस्याओं का समाधान करती थीं। उनकी दृष्टि बहुत मधुर और शक्तिशाली थी, जो उनसे मिलने वाले लोगों के मन पर अमिट छाप छोड़ती थी। वह जिनके साथ मिलती थी उनके साथ तुरंत आध्यात्मिक संबंध बना लेती थी। बापदादा द्वारा दीदी को "मनमोहिनी" उपनाम मिला, जिसका अर्थ है "वह जो मन को मंत्रमुग्ध कर दे"। **दीदी तीव्र पुरूषार्थी होने के साथ-साथ बहुत मनोरंजक भी थीं।** वह बेहद शालीन और शाही अंदाज में चुटकुले सुनती या सुनाती थीं, वे सच्ची-सच्ची रूप बसंत थी।

हेड क़्वारटर माउंट आबू के शांतिवन परिसर में “मनमोहिनी कॉम्प्लेक्स” का निर्माण उनके सम्मान में किया गया है। दीदी अपने जीवन के अंत तक सरल, स्नेहमयी, सटीक, सतर्क, नींद को जीतने वाली, वफादार, जिम्मेदार, कुशल प्रशासक, योगी ईश्वरीय छात्रा थीं। **उनका एक ही महामंत्र था ‘अब घर जाना है’|** वर्ष 1983, 28 जुलाई को दीदी अपने भौतिक देह का त्याग कर अव्यक्त अवस्था को प्राप्त हुई।